Newspaper Clips
February 28-29, 2016

February 29

Nai Duniya ND 29/2/2016 P-11

एक वर्ग ने कुछ संस्थानों को बताया राष्ट्रविरोधी गतिविधियों की पनाहगाह

जेएनयू विवाद पर आईआईटी बॉम्बे के फैकल्टी में मतभेद

नई दिल्ली (प्रे)। आईआईटी बॉम्बे के फैकल्टी के एक समूह ने उच्च शिक्षा के कुछ संस्थानों को राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का 'सुरक्षित पनाहगाह' बताया है। फैकल्टी के इस समूह ने राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी से अपील की है कि वे छात्रों को कैंपस में 'विचारधाराओं के युद्ध' का पीड़ित न बनने का संदेश दें। जेएनयू विवाद पर कुछ समय पहले आईआईटी मद्रास के भी फैकल्टी के दो समूहों के मतभेद सामने आए थे।

आईआईटी बॉम्बे के 60 फैकल्टी सदस्यों की यह याचिका दरअसल उसी संस्थान के एक अन्य समूह की ओर से बीते दिनों बयान जारी करने के बाद आई है। उस समूह ने जेएनयू विवाद में शामिल आंदोलनकारी छात्रों का समर्थन करते हुए कहा था कि सरकार को राष्ट्रवाद का अर्थ थोपना नहीं चाहिए।

राष्ट्रपति को लिखे पत्र में संस्थान के 60 फैकल्टी सदस्यों ने दावा किया है कि जेएनयू प्रकरण राष्ट्र हित को कमजोर करता है और यह इस बात के पर्याप्त संकेत देता है कि कुछ समूह प्रमुख संस्थानों के युवा मस्तिष्कों का इस्तेमाल शांति एवं सद्भाव के स्थान पर गाली-गलौच और उग्रता वाला माहौल बनाने की कोशिश के लिए कर रहे हैं। पत्र में कहा गया कि जेएनयू के अलावा, कई अन्य उच्च शिक्षा संस्थान ऐसी गतिविधियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह माने जाते हैं, जो कि राष्ट्रहित में नहीं हैं। कुछ मेधावी छात्र कैंपस में सकारात्मक माहौल बनाने के बजाय, अकादमिक गतिविधियों में बाधा डालने वाली हरकतों में शरीक हो जाते हैं।

इससे पहले जेएनयू विवाद पर ही दो अलग-अलग मतों के साथ आईआईटी, मद्रास के दो फैकल्टी समूहों ने अपने विवाद को सार्वजनिक किया था। उन्होंने भी अपनी सोच जाहिर करते हुए राष्ट्रपति को पत्र लिखे थे।

कन्हैया की जमानत पर हाई कोर्ट में आज फिर सुनवाई

नई दिल्ली (प्रे)। राष्ट्रद्रोह के आरोप में गिरफ्तार जेएनयू छात्रसंघ के अध्यक्ष कन्हैया कुमार की जमानत पर दिल्ली हाई कोर्ट में सोमवार को फिर से सुनवाई हो सकती है। दिल्ली पुलिस की इस सूचना पर कि वह कन्हैया को हिरासत में लेकर और पूछताछ करना चाहेगी, न्यायमूर्ति प्रतिभा रानी ने 24 फरवरी को सुनवाई 29 फरवरी तक के लिए मुल्तवी कर दी थी। सोमवार की सुनवाई इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है कि पुलिस कोर्ट को जांच के बारे में बताएगी। पुलिस ने कन्हैया को एक दिन की हिरासत में लेकर उसका सामना जेएनयू के ही दो और आरोपी छात्रों उमर खालिद और अनिर्बान भट्टाचार्य के साथ कराकर पूछताछ की है। उमर और अनिर्बान ने 23 फरवरी की रात पुलिस के सामने सरेंडर कर दिया था। अगले दिन कोर्ट ने दोनों को 29 फरवरी तक के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया। कन्हैया की पैरवी कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा था कि पुलिस की स्थिति रिपोर्ट के अनुसार, इस बात के कोई सबूत नहीं हैं कि उनके मुवक्किल ने राष्ट्रविरोधी नारे लगाए थे। कन्हैया को 12 फरवरी को गिरफ्तार करने के बाद 17 फरवरी तक पुलिस हिरासत में रखा गया था और बाद में 12 मार्च तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया। इस बीच पुलिस ने कन्हैया को 25 फरवरी को एक दिन के लिए अपनी हिरासत में लिया था।

Dainik Jagran ND 29/02/2016 P-13

आइआइटी में कम रैंक वाले भी पा सकते हैं मौका

जागरण संवाददाता, कानपुरः अग्रणी तकनीकी शिक्षण संस्थान आइआइटी में पढ़ने का सपना अब प्रवेश परीक्षा में कुछ नंबरों से पिछड़ने पर भी मिल सकता है। देशभर में संचालित 18 आइआइटी में अपनी सीट पक्की करने की ख्वाहिश रखने वाले छात्रों को इस बार चार या इससे अधिक मौके दिए जाएंगे। पिछले वर्ष तक आइआइटी में प्रवेश के लिए तीन काउंसलिंग ही होती थीं। यह निर्णय ज्वाइंट एडमिशन बोर्ड (जैब) की आइआइटी हैदराबाद में हुई बैठक में लिया गया है। बैठक में शामिल कानपुर परिक्षेत्र के चेयरमैन डॉ.एसएन सिंह ने बताया कि नई व्यवस्था से उन छात्रों को भी मौका मिल सकता है, जो रैंक कम होने से काउंसलिंग में भाग नहीं ले पाते थे।

ज्वाइंट एडमिशन बोर्ड की बैठक के अनुसार आइआइटी में दाखिले के लिए इस साल चार काउंसिलिंग होगी। सीटें खाली रहने की सूरत में यह संख्या और भी बढ़ सकती है। आइआइटी में प्रवेश की काउंसलिंग प्रक्रिया 25 जून से शुरू हो जाएगी। इसका शेड्यूल तैयार किया जा रहा है। आइआइटी में प्रवेश के लिए होने वाली संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) एडवांस का आयोजन 22 मई को होगा।

- 22 मई को जेईई एडवांस, 25 जून से काउंसलिंग की प्रक्रिया

200 सीटें रह गयी थीं खाली : पिछली बार देश भर में आइआइटी की दस हजार से अधिक सीटों में करीब दो सौ सीटें खाली रह गई थीं। इन सीटों पर उन छात्रों को मौका देने के उद्देश्य से काउंसलिंग की संख्या बढ़ाई जा रही है जो कुछ ही अंकों की कमी से आइआइटी में प्रवेश लेने से चूक जाते थे।

प्रश्न पत्रों में होगा बदलाव : सत्र 2017-18 से संयुक्त प्रवेश परीक्षा का प्रारूप बदल जाएगा। इसके लिए जैब ने एक टीम गठित कर दी है। यह टीम प्रश्न पत्र का प्रारूप तय करने की दिशा में काम करेगी। प्रवेश परीक्षा के पदाधिकारी इसे अमली जामा पहनाने से पहले संस्थानों में भी जाएंगे।

Education sector needs more public spending and private investment

Union Budget FY17 is an opportunity for using the Centre's spend as a strategic tool to shift our system's focus from being inputs-driven to learning-outcomes driven

DEEPAK MEHROTRA

Education sector impacts the future of the nation and, for that reason, it should ascend in importance, purely for the potential impact it can create at multiple levels. Simply put, education can fuel the government's well-intended initiatives such as Make-in-India, Digital India and Skill India. The influence of this sector can be felt by both industry and the common people and is, indeed, an investment into the future.

A well-educated population is the key driver for economic growth. Therefore, the government's agenda to revive economic growth must include strengthening the education system further. Apart from building the school infrastructure to improve student retention, Union Budget FY17 is an opportunity for using the Centre's spend as a strategic tool to shift our system's focus from being inputs-driven to learning-outcomes driven.

In fact, Budget FY17 could be a privileged opportunity for the finance minister to usher the changes in the sector, at a time when the government is finalising the New Education Policy. Clearly, there is a need to increase public expenditure on education to drive initiatives. Some of the focus areas that should be considered are:

- **Incentivising the sector for private investment:** To improve India's gross enrolment ratio (GER) across schools and colleges, and increase student retention, we have to focus on increasing collaborative efforts between private sector and the government to promote quality education for all. The government may take initiatives to boost private investment, along with devising a mechanism wherein the investor will get a fixed share in return. There is also a dire need to substantially add quality institutions, to ensure Indian students don't need to look overseas for securing the desired level of higher education.
- **Increasing the focus on virtual or blended education:** I believe the government must set aside budgets and engage the private sector vigorously to build virtual or blended institutions, to enhance access to quality education.
- **Faculty development:** India is grappling with a severe shortage of trained faculty, especially at the school level. To address this issue, the government should expedite the launch of a national mission for faculty development with a special focus on training of school teachers. The country needs setting up of specialised research and training institutes with focus on areas such as school leadership, early literacy, numeracy and pedagogy.
- **Revision of tax rates:** The education industry also desires that the government reconsiders the service tax on educational institutions, which eventually leads to an increase in the cost of the provision of educational services.

Specific incentives and initiatives in the above areas should be the focus of today's Budget. The complexity of the Indian educational challenge calls for greater involvement of private sector capital and expertise, especially global leaders, so that best practices reach Indian schools and colleges.

The author is managing director, Pearson India

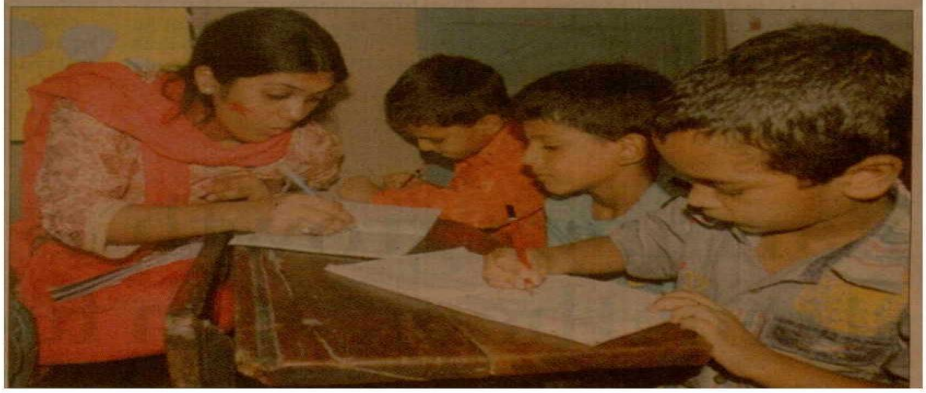

Biofilm growth can be stopped by injecting ‘cheater’ bacteria: IISc

http://www.bangaloremirror.com/others/sci-tech/Biofilm-growth-can-be-stopped-by-injecting-cheater-bacteria-IISc/articleshow/51180002.cms

Biofilms form when bacteria cling to surfaces and are responsible for a host of diseases and infections. A biofilm can form on any surface exposed to bacteria and some amount of water. Now researchers from the Bengaluru-based Indian Institute of Science (IISc), have shown that formation of biofilms can be disrupted by "tweaking their social behaviour".

The researchers said just like human communities, bacterial biofilms have their 'shady' characters, too. Widely called 'cheaters' and collectively called 'cheater populations', these bacteria refuse to partake in group behaviour that causes diseases, but still stay in the biofilm and reap the benefits. The IISc study, published in the journal Frontiers in Microbiology, shows infiltration of these non-cooperating cheaters can substantially weaken the biofilm, making it vulnerable to antibacterials and delay the origin and development of a disease.

The research focused on Salmonella entericaare, a class of bacteria that mainly cause of food-borne diseases worldwide. One of the main characteristics that makes this class of bacteria so virulent is their ability to form biofilms. Salmonella biofilms are known to occur on different surfaces including water distribution systems, food processing equipment, plant, and epithelial surfaces, while they also form persistent biofilms on gall stones in the host. Cells in a biofilm are notorious for their tolerance toward high doses of antimicrobials (for example, antibiotics), which is an agent that kills micro-organisms (include bacteria, fungi, archaea or protists and viruses) or inhibits their growth.

"Bacteria were traditionally believed to be free-living cells, but the perspective is fast changing with recognition of their social behavior. In this study, we evidently show that bacteria do cooperate in biofilms by producing public goods (matrix components). The cheaters do not contribute to the production of public good, but exploit the goods produced by the cooperators for their growth. The cheater infiltration caused a substantial reduction in the productivity of the overall biofilm and also reduced the strength of biofilm," Prof Dipshikha Chakravortty, department of microbiology and cell biology, IISc, said.

The research team now plans to develop a 'Trojan horse' that could disrupt the biofilm.

FINDING'S SIGNIFICANCE

Biofilms provide strength to the bacteria against environmental stresses like the host immune system, antibiotics, heavy metals. They are a major burden in medicine. According to the researchers, biofilm is the predominant lifestyle of bacteria in their natural settings. They are collectives of bacterial cells enmeshed in an extracellular polymeric matrix. The matrix protects the biofilm bacteria from external stresses like antibiotics, apart from their other functions. "With this background, the key findings of our study was that matrix production is costly for the individual. However, infiltration of matrix-non-producer — that is the cheater — impairs the anti-microbial susceptibility of biofilm bacteria as well as delays its pathogenicity (origin and development of a disease). This implies that such infiltration makes the biofilm become susceptible to detergents and antibiotics," said Prof Dipshikha Chakravortty, department of microbiology and cell biology, IISc.

February 28

IIT Delhi Tech Fest kicks off with a 'TRYST'

http://www.pagalguy.com/articles/iit-delhi-tech-fest-kicks-off-with-a-tryst-40525586

It was an atmosphere of zeal and curiosity as the inauguration ceremony of TRYST went underway at IIT Delhi on Friday, February 26. The much anticipated evening was a packed house as the technical minds from institutes across India flocked to the Dogra Hall to witness the event. The event started off with the launch of the theme, "THE FIFTH DIMENSION", which celebrates the world of possibilities waiting for us out there in the technical field, followed by the launch of the Mega Events based on the same idea.

The ceremony was graced by Mr Salil Pande, founder of VMock, Mr Pradeep Sharma, founder of Robosapiens and Chairman, TRYST, Prof. James Gomes. The words of encouragement and appreciation by the guests of honour set the stage nicely for the days to follow.

The ceremony ended with a laser show to mark the launch of the Tryst logo. Tryst is now officially open, with a bang of course.

The first day of the fest, 27th February turned out exactly as it was promised. The enthralling guest lectures by Mr Kris GopalaKrishnan, Mr Kunal Shah, Mr Shailesh Vikram Singh, Mr Sarthak Sethi and some more, further complemented by the engaging workshops like Rubik's cube, Aeromodelling and competitions comprising many quizzes were indeed the perfect recipe for a tech extravaganza.

Events like Paper presentation, RoboSoccer, Ecosummit, Lan Gaming and Youth Parliament amongst others were some of the events attended by the students. Also, when they were not busy showcasing their technical know-how, the students made sure to have some fun at the Informal Stage, Food Lane and the ever popular Laser Tag.

Deccan Herald ND 29/02/2016 P-8

AICTE asks varsities to set up disability resource centres

Prakash Kumar

NEW DELHI, DHNS: The All India Council for Technical Education (AICTE) has asked universities and colleges offering engineering and other professional programmes to open disability resource centres to provide special support to differently abled students in pursuing their studies.

The council has asked the higher educational institutions to establish dedicated centres for helping special students in completing their academic programmes on an "equal basis with others", accepting recommendations of a committee of experts appointed to laying down of modalities for setting up of such resource centres.

A decision to set up such dedicated centre for providing support to special students was taken at the meeting of the council's executive committee earlier this month. "I urge you goodself to look into the matter to set up disability resource centres," the AICTE Chairman Anil Sahasrabudhe said in a directive to all higher educational institutions offering engineering and various other professional programmes on February 24.

The council had set up the committee of experts to suggest measures on how special students can be helped to perform better in their engineering and professional degree programmes, in view of the suggestions made by the office of the chief commissioner for persons with disabilities in its annual report about eight years ago.

"Disability resource centres should be set up in the higher educational institutions to facilitate with quality education to students with disabilities on equal basis with others. A time bound schedule should be drawn up and implemented to make all the universities, colleges and other educational institutions accessible to them," the office of the chief commissioner for persons with disabilities in its report for the year 2008-09 and 2010-11.

The committee of experts, set up by the AICTE to examine suggestions, noted in its report to the council: "Generally these (special) students do not need any specific provision other than those required by able students for learning. It has been observed that in many cases, they are unable to cope up with their academic learning with normal students."

They favoured setting up of disability centres at higher educational institutions for such students, suggesting host of measures to improve the performance of students suffering from any disability.

Dainik Jagran ND 28/02/2016 P-20

भूकंप में भी आपको सुरक्षित रखेंगे टायरों से बने घर

रीना डंडरियाल, रुड़की

रविवार विशेष

◆ आइआइटी ने ईजाद की नई तकनीक

आमतौर पर बेकार हो चुके रबड़ के टायर प्रदूषण ही फैलाते हैं, लेकिन आने वाले वक्त में शायद हम इनसे बने घरों में रहें। ये घर न केवल सस्ते होंगे, बल्कि भूकंप की दृष्टि से सुरक्षित भी रहेंगे। रुड़की स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) ने ऐसी तकनीक विकसित कर ली है। पिछले दिनों मुंबई में आयोजित मेक इन इंडिया वीक में इस तकनीक का प्रदर्शन किया गया।

नई तकनीक को ईजाद करने वाले दल का नेतृत्व कर रहे भूकंप अभियांत्रिकी विभाग के प्रोफेसर पंकज अग्रवाल ने बताया कि टायरों से बने मकान उत्तराखंड जैसे राज्यों के लिए बेहद मुफीद साबित होंगे। उनके मुताबिक रबड़ के टायरों का सबसे बड़ा गुण है इसकी विस्को एलास्टिसिटी यानी यह झटकों को अवशोषित कर लेता है। दल में शामिल शोध छात्र अमित गोयल ने बताया कि इस खास तकनीक से बने भवनों की कीमत सामान्य भवनों की अपेक्षा 15 से 20 फीसद कम होगी। अमित के मुताबिक इसके लिए सबसे पहले कंक्रीट के खांचेनुमा ब्लॉक बनाए जाते हैं। इन ब्लॉकों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए रबड़ टायर के लिंक तैयार करने के साथ ही दो तरह के विस्को एलास्टिक लिंक बनाए जाते हैं। यह लिंक एक ब्लॉक को क्षैतिज और दूसरे को सीधा जोड़ता है। इस तकनीक से प्रयोगशाला में भवन का एक मंजिला व दो मंजिला मॉडल तैयार किया गया। इस भवन की जांच अप्राकृतिक तरीके से भूकंप के झटके देकर की गई। जांच में भवन पर कोई असर नहीं पड़ा।

Hindustan ND 28/02/2016 P-5

'इकोवेशन' से इंजीनियरिंग तक ऑनलाइन पढ़ाई

तकनीक

नई दिल्ली | रोहित पंवार

आईआईटी के छात्रों ने 'ओपन स्कूल' की शुरुआत की है। इसके लिए 'इकोवेशन' एप तैयार किया है। इससे घर बैठे स्कूल से लेकर इंजीनियरिंग और मेडिकल तक की पढ़ाई की जा सकती है।

इस एप को रितेश सिंह और अक्षत गोयल ने बनाया है। किसी भी स्कूल या कक्षा एवं कॉलेज का छात्र www.eckovation.com पर जाकर एप से जुड़कर पढ़ सकता है। शिक्षकों और अभिभावकों को भी इसमें शामिल किया गया है। हर कक्षा व हर विषय का एक ग्रुप कोड है। अगर कोई पांचवीं कक्षा का बच्चा है तो उसे अपनी जानकारी देने के बाद पांचवीं कक्षा का ग्रुप कोड डालना होगा। ऐसा करने पर वह देशभर से जुड़े पांचवीं कक्षा के छात्रों से जुड़ जाएगा। हर ग्रुप में हर कक्षा व विषय के शिक्षक हैं। वे उन्हें पढ़ाते हैं। हर कोई सवाल कर सकता है।

अहम बात यह है कि इस एप पर नोट्स, ऑडियो या वीडियो संदेश साझा करने की भी व्यवस्था है। एप इस्तेमाल करने पर कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसे गूगल प्ले स्टोर या एप्पल स्टोर से इंस्टॉल कर सकते हैं। गूगल प्ले स्टोर पर eckovation टाइप कर एप को डाउनलोड कर सकते हैं।

एप इसलिए खास है

- सोशल नेटवर्किंग साइट की तर्ज पर छात्र जुड़ सकते हैं
- छात्रों की निजी जानकारी कोई नहीं हासिल कर सकता, सिर्फ शिक्षक देख सकते हैं
- अभिभावक छात्र की पढ़ाई पर निगरानी कर सकते हैं
- शिक्षकों को जुड़ने के लिए साक्षात्कार देना होता है

"इकोवेशन एप को तैयार करने के पीछे हमने दो चीजें सोची थी। पहली, हर कोई छात्र मोटी फीस देकर ट्यूशन नहीं ले सकता। दूसरी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी। इन दो ही कमियों को दूर करने के लिए 'इकोवेशन' लॉन्च किया गया।

-रितेश सिंह और अक्षत गोयल, एप को बनाने वाले"

तैयारी भी कर सकते हैं

आईआईटी (जेईई परीक्षा) की तैयारी के लिए ऑनलाइन कक्षा में भाग लिया जा सकता है। पीएमटी की परीक्षा देने वाले छात्रों के लिए भी पाठ्यक्रम है। एक ग्रुप में 50 से अधिक शिक्षक जुड़े हैं। छात्र में क्या सुधार आया है, क्या नहीं? उसका शैक्षणिक परिणाम कोई भी अभिभावक देख सकता है। हर छात्र का ब्योरा शिक्षक के पास होता है। खास बात यह है कि अगर किसी को ग्रुप में किसी खास शिक्षक के पढ़ाने का तरीक पसंद आया तो उनसे एप पर सीधे व्यक्तिगत तौर पर संपर्क किया जा सकता है। शिक्षक अनुरोध स्वीकारने पर छात्र की प्रोफाइल पर विषय से जुड़े संदेह दूर कर सकते हैं।

Veer Arjun ND 29/2/2016 P-1

12वीं के छात्र ने प्लास्टिक की बोतलों से बनाया घर

वीर अर्जुन संवाददाता

नई दिल्ली। बेकार पड़ी प्लास्टिक की बोतलों से घर बनाने की बात सुनकर अजीब-सा लगता है लेकिन यदि आपको विश्वास न हो तो आप पदमपुर क्षेत्र के 41 आरबी गांव जाकर इस घर को देख सकते हैं। दरअसल छात्रों को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करने के इरादे से दून स्कूल अक्सर उनसे ऐसे प्रोजेक्टों पर काम करने को कहता है जिससे उनकी सोच और कुछ कर गुजरने की क्षमता में वृद्धि हो। ऐसे ही एक प्रोजेक्ट के लिए काम करते हुए दून स्कूल के 12वीं के छात्र जयदित्यवीर सिंह ने कोल्ड ड्रिंक की प्लास्टिक की फेंकी गई बेकार बोतलों से घर बनाने का कारनामा कर दिखाया है।

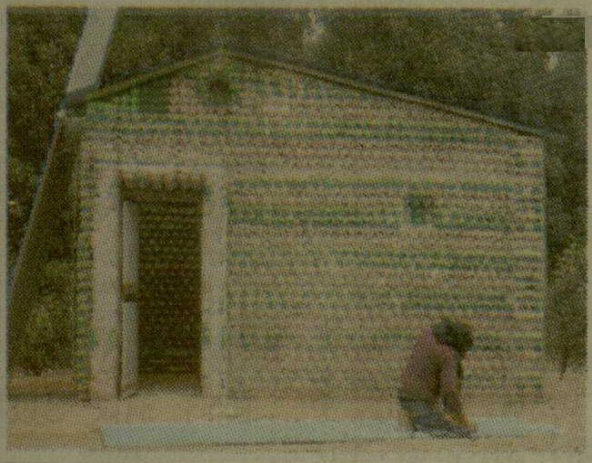

प्लास्टिक की बोतलों से घर बनाने वाला दून स्कूल का छात्र जयदित्यवीर सिंह व प्लास्टिक की बोतलों से बनाया गया घर।

जयदित्यवीर सिंह ने इस घर को बनाने में जिस तकनीक को अपनाया है उसमें खाली प्लास्टिक की बेकार बोतलों में रेतीली मिट्टी को भरा जाता है फिर इन्हें सीमेंट, रेत और मिट्टी की सहायता से खड़ा किया जाता है। इस तकनीक की मदद से गांव-देहात में कम लागत में एक ऐसा मजबूत और बेहतर घर बनाया जा सकता है जो सालभर आरामदायक तापमान बनाए

इससे एक ओर जहां प्लास्टिक की खाली बेकार बोतलों को ठिकाने लगाने की समस्या से छुटकारा मिलेगा वहीं दूसरी ओर इसका तापमान मौसम अनुसार रहने की वजह से बिजली की भी बचत होगी। याद रहे कि ईंटों के भट्ठे पर्यावरण के लिहाज से बेहद नुकसानदायक माने जाते हैं। परंपरागत ईंटों को बनाने में खेतों की उपजाऊ मिट्टी को भी नुकसान पहुंचता है। जयदित्यवीर सिंह के अनुसार इस 10 बाई 12 साइज के कमरेनुमा घर में प्लास्टिक की चार हजार बोतलों का इस्तेमाल हुआ है। जोकि एक छोटी फैमिली के रहने के लिए पर्याप्त है। जहां तक मजबूती का सवाल है उसमें भी यह घर परंपरागत तकनीक से बने घरों से मुकाबला करता है।